

---

Shri Vishnuproktam Tridevanamekatvapratipadanam

श्रीविष्णुप्रोक्तं त्रिदेवानामेकत्वप्रतिपादनम्

Document Information

---

Text title : Shri Vishnuproktam Tridevanamekatvapratipadanam

File name : tridevAnAmekatvapratipAdanaMshrIviShNuproktam.itx

Category : deities\_misc, shiva, vishhnu

Location : doc\_deities\_misc

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : Kalikapurana Adhyaya 11 shloka 51-60

Latest update : January 15, 2022

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

## श्रीविष्णुप्रोक्तं त्रिदेवानामेकत्वप्रतिपादनम्



Oneness of the trinity Brahma-Vishnu-Mahesha

श्रीभगवानुवाच -

ब्रह्मा भवतो भिन्नो न शम्भुर्ब्रह्मणस्तथा ।

न चाहं युवयोर्भिन्नोऽभिन्नत्वं सदातनम् ॥ ५१ ॥

प्रधानस्याप्रधानस्य भागाभागस्वरूपिणः ।

ज्योतिर्मयस्य भागो मे युवामेकोऽहमंशकः ॥ ५२ ॥

कस्त्वं कोऽहञ्च को ब्रह्मा ममैव परमात्मनः ।

अंशत्रयमिदं भिन्नं सृष्टिस्थित्यन्तकारणम् ॥ ५३ ॥

चिन्तयस्वात्मनाऽऽत्मानं संस्तवं कुरु चात्मनि ।

एकत्रं ब्रह्मवैकुण्ठशम्भूनां हृद्गतं कुरु ॥ ५४ ॥

शिरोघ्नीवाभेदेन यथैकस्यैव धर्मिणः ।

अङ्गानि मे तथैकस्य भागत्रयमिदं हर ॥ ५५ ॥

यज्ज्योतिरग्र्यं स्वपरप्रकाशं

कूटस्थमव्यक्तमनन्तरूपम् ।

नित्यञ्च दीर्घादिविशेषणाद्यै-

हीं परं तच्च वयं न भिन्नाः ॥ ५६ ॥

मार्कण्डेय उवाच -

एतच्छ्रुत्वा वचस्तस्य महादेवो विमोहितः ।

जानन् स चाप्यभिन्नत्वं सद्विस्मृत्यान्यचिन्तनात् ॥ ५७ ॥

पुनः प्रपच्छ गोविन्दमनन्यत्वं त्रिभेदिनाम् ।

ब्रह्मविष्णुत्र्यम्बकानामेकस्य च विशेषकम् ॥ ५८ ॥

ततो नारायणः पृष्टः कथयामास शम्भवे ।

अनन्यत्वं त्रिदेवानामेकत्वञ्च व्यदर्शयत् ॥ ५९ ॥

श्रुत्वा ततो विष्णुमुखाब्जकोशा-

दनन्यतां विष्णुविधीशतत्त्वे ।


दृष्ट्वा स्वरूपं च जघान नैनं

विधिं मृडः पुष्पमधुप्रकाशकम् ॥ ६० ॥


इति श्रीकालिकापुराणे त्रिदेवानामेकत्वप्रतिपादकः एकादशोऽध्यायः ॥

Proofread by PSA Easwaran

---

——  
*Shri Vishnuproktam Tridevanamekatvapratipadanam*

pdf was typeset on September 16, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

